भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान
कोलकत्ता केंद्र
साल्ट लेक सिटी, कोलकत्ता – 700 091

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी

विकसित भारत की संकल्पना में राजभाषा प्रबंधन की भूमिका

21-22 अप्रैल 2025

पंजीकरण प्रपत्र

नाम : ....

पदनाम : ....

संस्थान का नाम और पता :

....
....
....
....

फोन (का):

....

मोबाइल :

....

ई-मेल :

....

प्रतिभागी के हस्ताक्षर

कार्यालय प्रमुख के हस्ताक्षर

संरक्षक

डॉ. रविशंकर सी. एन., निदेशक एवं कुलपति

सह-संरक्षक

डॉ. एन. पी. साहू, संयुक्त निदेशक

आयोजन समिति

डॉ. तापस कुमार घोषाल, अध्यक्ष, कोलकत्ता केंद्र
डॉ. गौर हरि पैलान, प्रधान वैज्ञानिक, कोलकत्ता केंद्र
डॉ. गौरांग बिश्वास, प्रधान वैज्ञानिक, कोलकत्ता केंद्र
श्री संजय बोकोलिया, संयुक्त निदेशक (प्रशासन)/वरिष्ठ कुलसचिव
श्री रजनीश कुमार सिंह, नियंत्रक

संगोष्ठी संयोजक (मुख्यालय)

श्री जगदीशन ए.के., संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
फोन: 022- 26361446; विस्तार-739
मोबाइल : 09742621718
email:hindisection@cife.edu.in;
jagadeesan@cife.edu.in

श्री प्रताप कुमार दास, मुख्य तकनीकी अधिकारी

श्रीमती रेखा नायर, मुख्य तकनीकी अधिकारी

संगोष्ठी संयोजक (कोलकत्ता केंद्र)

डॉ. दिलीप कुमार सिंह, वैज्ञानिक

नामांकन स्वीकार करने की अंतिम तिथि
11.04.2025

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी

विकसित भारत की संकल्पना में राजभाषा प्रबंधन की भूमिका

21-22 अप्रैल 2025

कोलकत्ता

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान
कोलकत्ता केंद्र
साल्ट लेक सिटी, कोलकत्ता – 700 091

भूमिका

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान एक शीर्षस्थ मात्स्यिकी विश्वविद्यालय है। यह संस्थान कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ़एओ) एवं संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) के सहयोग से 6 जून 1961 को स्थापित किया गया तथा 16 अप्रैल 1979 को यह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नियंत्रण में आ गया। इसके बाद शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार को शामिल करने के लिए इसके क्षेत्र और अधिदेश को बढ़ा दिया गया। मात्स्यिकी के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय ने कई उपलब्धियां हासिल की हैं। अपनी स्थापना के इन 63 वर्षों के काल में संस्थान ने मात्स्यिकी विज्ञान और इससे सम्बद्ध अन्य विषयों के उच्चतर अध्ययन में उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में उभरा है। मुंबई स्थित मुख्यालय के अतिरिक्त संस्थान के पांच क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता (पश्चिम बंगाल), रोहतक (हरियाणा), पवारखेडा (मध्य प्रदेश), काकिनाड़ा (आंध्र प्रदेश) और मोतीपुर (बिहार) में स्थित हैं।

मात्स्यिकी क्षेत्र के अंतर्गत मानव संसाधन विकास में संस्थान के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए इसे 29 मार्च 1989 को समतुल्य विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। देश का एक प्रमुख विश्वविद्यालय होने के कारण यह संस्थान अपने शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यों में सदैव नवाचार लाने का प्रयास करता है ताकि इसमें अध्ययनरत सभी छात्र अपने विषय में महारथ हासिल कर सकें।

"आधुनिकतम आधारभूत संरचना उपलब्ध कराते हुए शिक्षण और अनुसंधान में उत्कृष्टता प्राप्त करने के साथ-साथ विश्व के योग्यतम शिक्षकों और छात्रों को आकर्षित करना" संस्थान का लक्ष्य है। इस लक्ष्य को साकार करने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। यह संगोष्ठी भी इसका एक अभिन्न अंग है।

परिकल्पना

शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के साथ-साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी संस्थान द्वारा महत्वपूर्ण एवं ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। राजभाषा नीति से संबंधित नियमित कार्यकलापों के अतिरिक्त राजभाषा हिन्दी में मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र से जुड़े विभिन्न विषयों पर तथा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और हिन्दी के समुचित प्रचार-प्रसार हेतु संस्थान प्रतिवर्ष राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करता आ रहा है। इस संस्थान द्वारा अब तक लगभग 22 संगोष्ठियाँ आयोजित की जा चुकी हैं। यह संगोष्ठी इस सिलसिले की अद्यतन कड़ी है। इस संगोष्ठी का आयोजन भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के कोलकत्ता स्थित केंद्र में किया जाएगा।

संगोष्ठी का उद्देश्य

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य यह है कि राजभाषा के हीरक जयंती वर्ष को पुरज़ोर तरीके से अंकित करने के साथ-साथ विकसित भारत की संकल्पना के अंतर्गत विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए उपलब्ध अद्यतन सुविधाओं पर गहन विचार-विमर्श हो ताकि इन सुविधाओं का प्रयोग करते हुए राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति सुनिश्चित की जा सके।

वर्तमान युग में किसी भी भाषा के विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसे सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ी जाए। तकनीक के विस्तार और लोगों तक उनकी निरंतर बढ़ती पहुंच के कारण वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग आसान हो सका है। इन सुविधाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान करना इस संगोष्ठी का एक अन्य उद्देश्य है, जिससे प्रतिभागी हिंदी में अधिकाधिक कार्य कर सकें और अपने-अपने कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकें।

विकसित भारत के परिदृश्य में राजभाषा-प्रबंधन के प्रभावी तरीके, सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में राजभाषा-कार्यान्वयन तथा अनुवाद को प्रभावी बनाने के लिए तकनीकी साधनों का उपयोग कैसे करें आदि विषयों पर प्रतिभागियों को विचारों के आदान-प्रदान हेतु एक मंच प्रदान करना भी इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य है।

संगोष्ठी की रूपरेखा

इस संगोष्ठी की रूपरेखा ऐसे तैयार की गई है कि प्रतिभागियों को संबंधित विषय के बारे में पूरी जानकारी मिले और विचार-विमर्श में उनकी पूरी भागीदारी हो। इसलिए प्रत्येक व्याख्यान एवं चर्चा सत्र के लिए एक घंटे का समय दिया गया है ताकि प्रतिभागी सक्रिय रूप से इसमें भाग ले और अपनी शंकाओं का समाधान पा सकें।

तकनीकी सत्र

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में तीन मुख्य तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा, जिनके अंतर्गत विभिन्न विषयों पर विचार-मंथन किया जाएगा। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि तकनीकी सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लें और संबंधित विषयों पर अद्यतन जानकारी हासिल करें और उनका प्रयोग कार्यालयीन कार्यों में करें। इस संगोष्ठी में राजभाषा एवं तकनीकी के क्षेत्र में लब्धप्रतिष्ठित विषय विशेषज्ञ विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देंगे। तकनीकी सत्रों का विवरण निम्नलिखित हैं:

I) पहला सत्र - राजभाषा हिंदी

इस सत्र में कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में आने वाली प्रमुख समस्याओं और उसके समाधान पर चर्चा की जाएगी।

II) दूसरा सत्र - राजभाषा और अनुवाद

इस सत्र में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अनुवाद की महत्ता और अनुवाद के लिए उपलब्ध नवीन साधनों पर चर्चा की जाएगी।

III) तीसरा सत्र - राजभाषा और प्रौद्योगिकी

इस सत्र में हिंदी के विकास में प्रौद्योगिकी के योगदान पर तथा इसका इस्तेमाल कैसे किया जाना चाहिए, इस पर चर्चा की जाएगी।

प्रतिभागी

इस संगोष्ठी में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों के संयुक्त निदेशक (राजभाषा)/ उप निदेशक (राजभाषा)/सहायक निदेशक (राजभाषा)/राजभाषा का कार्य देख रहे वैज्ञानिक/ तकनीकी/ प्रशासनिक वर्ग के अधिकारी या कर्मचारी/ राजभाषा प्रभारी/ राजभाषा का कार्य देख रहे अन्य कार्मिक आदि भाग ले सकते हैं।

नामांकन

सभी प्रतिभागियों को अपना नामांकन अंतिम तिथि से पहले कार्यालय प्रमुख के माध्यम से hindisection@cife.edu.in अथवा jagadeesan@cife.edu.in के ई-मेल पर भेजें। नामांकन गूगल फार्म के माध्यम से भी भिजवाया जा सकता है ।

आवास

प्रतिभागियों के लिए आवास की व्यवस्था संस्थान के अतिथि गृह में किया जाएगा। अगर किसी को आवास की ज़रूरत नहीं तो कृपया उसकी जानकारी हमें प्रदान करें।

लिंक

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfJuEoR6its8Dm31-tRbTiu8nCQZeJDBWYCmCG00eqKssODXA/viewform?usp=pp_url